कोरोना (कोविड–19) वाइरस का भारतीय महिलाओं की सामाजिक और पारिवारिक स्थिति पर प्रभाव

डा0 सीमा रानी

सारांश

कोरोना वाइरस इस समय पूरे विश्व में अपना जाल फैला चुका है। पूरे विश्व में ऐसा कोई देश नहीं है जो इससे प्रभावित न हुआ हो। कोरोना महामारी के रूप में मानव जाति को संक्रमित करता जा रहा है। इस महामारी के संक्रमण के समाज को बचाने के लिए सरकार द्वारा लाकडाउन किया गया जिससे संक्रमण को रोका जा सके। लेकिन इस लाकडाउन ने सारे समाज को प्रभावित किया है, विशेशकर मजदूर वर्गद्व किसान और महिलाऐं। मजदूर वर्ग दैनिक मजदूरी करता है असलिए उसे खाने–नीपे की समस्या उत्पन्न हो गई है। किसान अपनी फसल को लेकर परेशान है। अगर बात करें महिलाओं की तो इस महामारी ने उन्हें भी बहुत प्रभावित किया है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखें तो यह भारतीय घरेलू, कामकाजी और निर्धन परिवारों की महिलाओं को भी बहुत प्रभावित करर ही है।

भारतीय महिलाएं आज अनेक समस्याओं से जूढ रही हैं। भारतीय समाज के पुरूश प्रधान समाज की संरचना ने इनकी इस स्थिति को और प्रभावित किया है। वे कार्य क्षेत्र परिवार दोनों जगह अपनी भूमिका निभा रही हैं। इस कारण उन्हें मानसिक और शारीरिक दोनों परेशानियां ही प्रभावित करती हैं।

मुख्य शब्दः *कोरोना, महामारी, लाकडाउन, प्रभावित, महिलाएं।*

प्रस्तावना

वायरस इस समय पूरे विश्व में अपना जाल फैला चुका है। पूरे विश्व में ऐसा कोई देश नहीं है जो इससे प्रभावित न हुआ हो। कोरोना, महामारी के रूप में मानव जाति को संक्रमित करता जा रहा है।

भारत जैसे विकासशील देश में स्थिति और भी प्रभावकारी हो जाती है। आज इस महामारी ने पूरी मानवजाति के लिये जीने का संकट पैदा कर दिया है। इस महामारी ने सम्पूर्ण विश्व जगत के लिये कठिनाई पैदा कर दी है। आज अनेक विकसित राष्ट्र भी इस महामारी के सामने विचलित हो गए हैं। अमेरिका, रूस, इंग्लैंड व ब्राजील जैसे राष्ट्र भी आज परेशानी में खड़े नजर आ रहे है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखें तो यह महामारी और भी विकराल रूप लिए हमारे

सामने खड़ी है।

इस महामारी के संक्रमण से समाज को बचाने के लिए सरकार द्वारा लॉकडाउन किया गया जिससे इसके संक्रमण को रोका जा सके। लेकिन इस लॉकडाउन ने सारे समाज को प्रभावित किया है। विशेषकर मजदूर वर्ग, किसान और महिलाएं। मजदूर वर्ग दैनिक मजदूरी करता है। इसलिए उसे खाने पीने की समस्या उत्पन्न हो गई है। किसान अपनी फसल को लेकर परेशान है। अगर बात करे तो महिलाओं की तो इस महामारी ने उन्हें भी बहुत प्रभावित किया है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखें तो यह भारतीय महिलाओं को भी बहुत प्रभावित कर रही है।

कोरोना वायरस के प्रकोप के कारण दुनिया के अलग–अलग देशों में लॉकडाउन चल रहा है और लोक घरों में बंद है। घरों में रहने के कारण मुख्य रूप से महिलाएं प्रभावित हुई हैं। चाहे वे घरेलू महिलाएं हो या कामकाजी महिलाएं हो, दैनिक मजदूरी करने वाली महिलाएं हो या घरों में काम करने वाली महिलाएं सभी पर लाकॅडाउन का प्रभाव पड़ रहा है। इस सब में वे महिलाएं भी शामिल हैं जो अक्सर अपने जीवन साथी के हाथों प्रताड़ित होती रहती हैं। इस प्रताड़ना का रूप शारीरिक और मानसिक दोनों हैं। वर्तमान में अगर देखें तो ज्ञात होता है कि इस दौरान शारीरिक और मानसिक उत्पीड़न के मामले ज्यादा बढ़ गए हैं। कुछ घटनाओं का अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ कि दैनिक मजदूरी करने वाली महिलाएं और घरों में काम करने वाली महिलाएं ज्यादा प्रताड़ित हो रही है। एक तो काम बंद हो गया है कुछ मालिकों को छोड़ कर सभी ने काम नहीं तो पैसा नहीं वाली सोच बना ली है। जिसके कारण पैसे की तंगी हो गई है और उनके पति भी ऐसी ही कोई दैनिक मजदूरी का काम करते हैं तो वह भी बंद हो गया है। जिसके कारण खाने पीने की कमी हो गई है और कुछ के पति मद्यपान करते हैं तो उसके लिए भी पैसे नहीं हैं इस सबका गुस्सा उनके पति उन्हें शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताड़ित करके निकालते हैं।

भारत जैसे देश में यह स्थिति ज्यादा भयावह है क्योंकि भारतीय समाज पुरूष प्रधान समाज है और इसके संबंध में बेटियों को बचपन से ही सिखाया जाता है। उसका लालप–पालन इसी समाज के अनुसार किया जाता है और इसलिए प्रत्येक महिला इसे ही अपना भाग्य मान लेती है। आज भारत जैसे देश में दैनिक मजदूरी करने वाले परिवारों में स्थिति चिंताजनक है। एक तो जीवन यापन के स्रोत लगभग बंद हो गए हैं और जीवन की दैनिक आवश्कताओं की पूर्ति के लिए भी सरकार या दूसरे लोगों पर निर्भरता बढ़ गयी है। घरेलू हिंसा के केस आए दिन नज़र आ रहे हैं। मुख्य रूप से ये घटनायें निर्धन परिवारों में अधिक है।

कोरोना वायरस के कारण इस लॉकडाउन में मध्यम वर्ग की महिलाएं भी प्रभावित हुई हैं और पेशेवर कामकाजी महिला भी उतनी ही प्रभावित हुई हैं। लॉकडाउन के कारण लाक आज घराके से ही ऑसि के सभी कार्य कर रहे हैं। भारत में विडंबना यह है कि लॉकडाउन के कारण मध्यम वर्ग की महिला पर काम का बोझ बढ़ ही नहीं गया है बल्कि दुगुना हो गया है। यही कारण है कि लॉकडाउन का समय मुसीबत का सबब बन गया है। इस लॉकडाउन के कारण नौकरीपेशा महिलाएं जहां वर्क फ्रॉम होम करते हुए 9 से 10 घंटे ऑफिस का काम कर रही हैं वही इसी

सब के बीच उन्हें घर व परिवार का भी पूरा ख्याल रखना पड़ रहा है। यह स्थिति उन्हें मानसिक और शारीरिक दोनों तरह से थका देने वाली है। कुछ कंपनियां ऐसा मानती है कि वर्क फ्राम होम के कारण एम्प्लाईस का समय बच रहा है इसलिए उनसे अधिक काम की अपेक्षा की जा रही है। ऐसे में पुरूष ही नहीं बल्कि महिलाओं को भी घर से ही काम करने पड़ रहे हैं। भारत जैसे पुरूष प्रधान समाज में यह स्थिति और भी ज्यादा परेशानी इसलिए बन रही है क्योंकि उनके लिए सिर्फ आफिस ही नहीं बल्कि घर के कामों के घंटे भी बढ़ गए हैं।

भारतीय समाज में आमतौर पर घरेलू कामों की जिम्मेदारी महिलाओं का होती है और लॉकडाउन में उनके सहयोग के लिए आने वाली मेड भी छुटटी पर ही है तो ऐसी स्थिति काम के बोझ का बढ़ा हुआ प्रतिशत महिला के हिस्से में ही आता है। अब लॉकडाउन में यही हो रहा है। उन्हें अब घर के सभी काम खुद ही करने पड़ रहे है। एक तो ऑफिस के काम की चिंता रहती है उपर से खाने में क्या बनाना है या घर के अन्य कामों की चिंता लगी रहती है। प्रतिदिन यही स्थिति होने के कारण आज महिलाएं मानसिक तनाव से भी गुजर रही हैं। इस स्थिति की एक वजह यह भी है कि अधिकतर परिवारों में पुरूषों से घरेलू कामों में हाथ बंटाने की अपेक्षा नहीं की जाती है। इस कारण उन्हें घर से जुड़े छोटे–मोटे काम भी करने में परेशानी आती है। अब जब अचानक लॉकडाउन की स्थिति आ गई है तो इस तरह के परिवारों की महिलाओं के पास घर और ऑफिस के काम को खुद ही संभालने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा है।

दिन भर घर और ऑफिस के काम करने की वजह से महिलाओं के पास अपने लिए बिल्कुल भी समय नहीं बच रहा है। बिना किसी की मदद के घर के सारे काम उनके लिए एक मुयीबत बनता जा रहा है। इसकी वजह से अपनी डायट का ख्याल तो दूर की बात है उन्हें सोने के लिए पर्याप्त समय भी नहीं मिल पा रहा है।

इस अध्ययन के कुछ कामकाजी महिलाओं से बात करने के बाद ये भी ज्ञात हुआ कि इन दोनों स्थितियों में अर्थात दो मंचों पर काम करने के बाद महिलाओं को शारीरिक और मानसिक दवाब की परेशानी झेलनी पड़ रही है। कुछ महिलाओं का बच्चा छोटा है तो उन पर तीन जिम्मेदारियां आ गई है। एक घर का काम, बच्चे को संभालना और तीसरा ऑफिस के काम की जिम्मेदारी। यदि बच्चे छोटे नहीं हैं तो परिवार में इतने सदस्य हैं जो कि सभी वर्क फ्रॉम होम के कारण घर से ही काम कर रहे हैं तो परिवार के इतने लोगों का खाना और अन्य कामों की जिम्मेदारी भी महिलाओं पर आ जाती है।

इन स्थितियों के कारण होने वाली शारीरिक और मानसिक थकान महिलाओं की काम करने की क्षमता पर भी असर डाल रही है। ऑफिस में काम करने वाले घंटों की तंख्वाह तो महीने में मिल जाती है पर घर के काम–काज का कोई हिसाब नहीं होता क्योंकि भारतीय समाज के अनुसार ये सभी कार्य उसके जीवन का हिस्सा है और उसकी जिम्मेदारी है। एक अध्ययन के अनुसार हर एक महिला 6 से 8 घंटे यह अवैतनिक कार्य करती है और वर्तमान में इन घंटों की संख्या बढ़ गयी है।

महिलाएं पुरूषों की तुलना में किसी भी संकट में ज्यादा सर्तक और सक्रिय होती हैं। बेहतर प्रबन्ध और बुरे हालत में भी बड़ी हिम्मत से परिवार और समाज को संभाले रहती हैं। ये अलग बात है कि जब संकट नहीं रहता है तब वे परिवार और समाज दोनों में ही फिर से उपेक्षित हो जाती है। कोरोना के इस संकट में उन्होंने कुछ अतिरिक्त जिम्मेदारियों को ग्रहण कर लिया है। मानसिक रूप से वो टूट न जाएं इस पर हम सबको ध्यान देना चाहिए।

भारत में जहां एक और लॉकडाउन के कारण कामकाजी महिलाओं पर प्रभाव पड़ रहा है। वहीं दैनिक मजदूरी करने वाली महिलाएं, घरेलू कामगार महिलाएं, खेती में श्रमिक के रूप में काम करने वाली महिलाएं और दैनिक मजदूरी करने वाले पुरूषों की पत्नियां भी आज शारीरिक और मानसिक शोषण का शिकार हो रही हैं। कोरोना के बढ़ते मामलों के बीच घर में बंद रहने के अलावा कोई चारा भी नहीं है। लेकिन इतना सब होने के बावजमद पारिवारिक हिंसा पर जागरूकता के संदेश सोशल मीडिया से नदारद हैं।

आज महिलाओं पर पड़े कामकाज के बोझ को भी चुटकुलों में बदल दिया गया है। हर देश और हर समाज के लिए कोरोना संक्रमण एक इम्तिहान बन गया है और इससे लड़ने की सबसे बड़ी कोशिश है लॉकडाउन। ये लॉकडाउन एक तरफ परिवारों के एक जुट होने का नाम बन गया है लेकिन दूसरी तरफ का एक बड़ा हिस्सा इसी दौरान घरेलू हिंसा में घिर गया है।

भारत में उत्तर प्रदेश, दिल्ली, बिहार, मध्यप्रदेश और महाराट्र में ये मामले अन्य राज्यों की अपेक्षा सबसे अधिक हैं। घरेलू हिंसा से जूझ रही ये महिलाएं अब न तो आम दिनों की तरह अपने माता–पिता के पास जा सकती हैं और न ही किसी दोस्त को मदद के लिए बुला सकती हैं।

इस स्थिति पर संयुक्त राष्ट्र महासचिव अंटोनिओ गुटेरेस ने कहा है कि दुनिया में कोरानेा वायरस के लगातार बढ़ते हुए संक्रमण का महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। जिसके कारण उनके प्रति मौजूद सामाजिक असमानता काफी बढ़ी है। एक वार्ता में उन्होंने कहा कि इस माहामारी के कारण महिलाओं के स्वास्थ्य से लेकर उनकी आर्थिक स्थिति और सामाजिक सुरक्षा पर भी बुरा प्रभाव पड़ा है।

महिलाओं के खिलाफ हिंसा भी काफी बढ़ गई है। उन्होंने कहा कि कोविड के खिलाफ लड़ाई में जुटी महिलाओं और उनसे जुड़े संगठनों की भूमिका के महत्व को समझना होगा। महिलाओं के भविष्य को केन्द्र में रखकर सामाजिक और आर्थिक नीतियां बनाई जानी चाहिए। जिसका परिणाम बेहतर होगा और सतत विकास का लक्ष्य हासिल करने में मदद मिलेगी। यू0एन0 महासचिव ने सभी सरकारों से आग्रह किया है कि महिलाओं के खिलाफ हिंसा की रोकथाम और उसके निवारण के उपायों को कोविड–19 ने निपटने के लिए सभी राष्ट्र योजनाऐं बनाये।

राष्ट्रीय महिला आयोग द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों के अनुसार, जहां एक ओर मार्च के पहले सप्ताह में महिलाओं के विरूद्ध होने वाली हिंसा के 116 मामले सामने आए, वहीं मार्च के अंतिम

सप्ताह में ऐसे मामलों की संख्या बढ़कर 257 हो गई। घरेलू हिंसा पर शोध करने वाले विशेषज्ञ बताते हैं कि जब महिलाओं और पुरूषों को रोजगार मिलता है तो घरेलू हिंसा में गिरावट आती है क्योंकि पति–पत्नी के बीच बातचीत कम हो जाती है। लेकिन लॉकडाउन के कारण दंपति के सामने रोजगार की असुरक्षा का प्रश्न उठ खड़ा हुआ है जिससे दोनों ही तनाव ग्रस्त रहते हैं। इसी तनाव के कारण पारिवारिक कलह बढ़ जाती है जो अततः घरेलू हिंसा में परिणत हो जाती है।

लॉकडाउन में महिलाओं पर परिवार की देखभाल, बच्चों की देखरेख, घरेलू कार्यों के अलावा पति की इच्छाओं की पूर्ति की अतिरिक्त जिम्मेदारी का दवाब भी बढ़ गया है। जिससे अवसाद में बढ़ोत्तरी होने से पारिवारिक कलह भी बढ़ गया है।

स्वादिष्ट खाना न बनाना, ससुराल वालों की देखभाल न करना व बच्चों की उपेक्षा करना जैसे कारण भी उन पर डालकर परिवार में कलह की स्थिति उत्पन्न हो रही है। लॉकडाउन के पालन में लगी पुलिस की अत्यधिक व्यस्तता के कारण इन शिकायतों का त्वरित समाधान नहीं हो पा रहा है।

भारत में इसमें सुधार लाने के लिए सबसे पहले कदम के तौर पर यह आवश्यक होगा कि पुरूषों को महिलाओं के खिलाफ रखने के बजाय पुरूषों को इस समाधान का भाग बनाया जाए। मर्दानगी की भावना को स्वस्थ मायनों में बढ़ावा देने और पुराने घिसे–पिटे ढर्रे से छुटकारा पाना अनिवार्य होगा। भारत सरकार ने महिलाओं और बच्चों को घरेलू हिंसा से संरक्षण देने के लिए घरेलू हिंसा अधिनियम 2005 को संसद में पारित कराया।

इस कानून में निहित सभी प्रावधानों का पूर्ण लाभ प्राप्त करने के लिए यह समझना जरूरी है कि पीड़ित कौन है? इस संकट की घड़ी में घरेलू हिंसा से निपटने के लिए पुलिस से अलग डिफेंस में कार्यरत लोगों की सहायता ली जा सकती है। राष्ट्रीय महिला आयोग ने घरेलू हिंसा पीड़ितों की सहायता के लिए 15 लाख से अधिक गैर सरकारी संगठनों की एक टास्क फोर्स बनाने का निर्णय किया गया है, जिससे महिलाओं की जरूयरत के हिसाब से मदद की जा सके।

इस सबके अलावा समाज में भी जागरूकता लानी होगी कि इस संकट की घड़ी में सभी को एक दूसरे का ध्यान रखना होगा और पुरूषों को भी महिलाओं की अहमियत को समझना होगा। भारतीय समाज की पुरानी रूढ़ियों को त्याग कर उन्हें महिलाओं का सहयोगी हमसफर बनना होगा।

जिससे महिलाएं मानसिक और शारीरिक रूप से टूट न जाय क्योंकि आज महिलाएं घर में एक योद्धा के रूप में अपने परिवार के बचाव के लिए खड़ी हैं। जहां उन्हें मानसिक सहारे की आवश्यकता है जो उसे अपने परिवार के सदस्य से विशेष रूप से अपने पति से ही मिल सकता है। क्योंकि भारतीय समाज में आज भी ज्यादातर पुरूष पुरानी मानसिकता त्याग नहीं पाएं हैं। आज जरूरत इस बात की है कि सरकार द्वारा किए गए उपाय भी तभी कारगर हैं जब ऐसे लोगों और समाज की मानसिकता बदले।

संदर्भ ग्रंथ

1. घरेलू हिंसा का अप्रभावी लॉकडाउन, संपादकीय, ''दृष्टि द विजन'', सामाजिक न्याय, 09 अप्रैल 2020।
2. गोयल, विजय, ''कोरोना संकट का सबसे ज्यादा भार परिवार में महिलाओं पर आ पड़ा है'', प्रभासाक्षी न्यूज नेटवर्क, 23 मई 2020।
3. कोविड–19 का महिलाओं के जीवन पर पड़ा प्रतिकूल प्रभावःगुटेरस, हिन्छी न्यूज, 10 अप्रैल, 2002।
4. अंजुम, अफसा0 लॉकडाउन में बढ़ती घरेलू हिंसाः आपदा के समय महिलओां के लिए एक और इंतिहान, द वायर 07 अप्रैल 2002
5. शर्मा, मोहितः ''घरेलू जीवन पर लॉकडाउन का असर, आर्थिक व सामाजिक चुनौतियों की वजह से बढ़ेगी हिंसक घटनाएं, पत्रिका, 11 अप्रैल 2020।
6. शर्मा, तृप्ति, ''कैसेस कामकाजी महिलाओं के लिए मुसीबत बनता जा रहा है लॉकडाउन'', नवभारत टाइम्स, 01 अप्रैल 2020
7. मोहन, मेघा, : जेंडर एंड आइडैनटिटि संवाददाता, कोराना वाइरस, मैं उस आदमी के साथ लॉकडाउन में हूं जो मुझे मारता है। बी0बी0सी0 न्यूज हिन्दी, 31 मार्च 2020